



This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website

<https://kksu.co.in/>

Digitization was executed by NMM

<https://www.namami.gov.in/>

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust,
New Delhi

CC-0. In Public Domain. Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection
<https://egangotri.wordpress.com/>

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत
विश्वविद्यालय ग्रंथालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र...M.490 विषय.....
नांव- श्रीमद्भगवद्गीता. ५. अध्याय. १. टीका
लेखक/लिपीकार रामन. पंडित M. 84
पृष्ठ... १
काळ पूर्ण/अपूर्ण



श्री

श्रीमंगलमूर्तये नमः॥ श्रीगुरुदेवदत्ता
त्रयाय नमः॥ श्रीलक्ष्मिवासुदेवाय न
मः॥ गीते चेश्लोकाचिटिकाप्राकृतयथा
श्रुतिपिकावामनपंडितयाणिके लिखा
तिलवो व्या॥ श्रीकृष्ण जयकृष्ण जयजय
कृष्ण॥

अध्याय ५ वा तिल

श्रीगुरुभ्यो नमः॥ श्रीमते भगवते भ
गवत्तमाय सर्वोत्तिमाय स्वात्मारामप
रमहंसप्रियाय मेघश्यामाय देवाधि
देवाय श्रीवासुदेवाय नमः॥ जयज
यपरमहंसानंदावतंस॥ जयजयभ
क्तजनमानसहंस॥ जयजयभवदुः
खकंसविध्वंस॥ देवदेव किनंदन॥ १॥
जयजयसारख्ययोगसंसिद्धिरूप॥
जयजयकर्मसंन्यासक्रमप्राप्यस्व
रूप॥ जयजयसदसद्विश्वरूप॥ प
रमहंसपुरुषोत्तम॥ २॥ जयजयप
रमसदय॥ जयजयश्रीकृष्णसदय
जयजयमायातीतमायामय॥ जगद्ग
दयलयनिलयगोविंद॥ ३॥ जयजय
भवरोगवैद्य॥ जयजयविद्यामृतप्रदा
य॥ जय जगन्नाथ त्रेक त्रेदा॥ निखि

लवंचमुकुंदसच्चिदानंद॥४॥ जय
जयश्रीकृष्णालय॥ जयजयकल्या
णगुणवसरालय॥ जयजयनिखिल
निलयस्वात्मनिलय॥ पालयपालय
जगद्गुरो॥ ५॥ (६॥ ७॥ ८॥ ९॥
श्रुतिनतत्रचक्षुर्गच्छति॥ श्रुत्यर्थ॥
त्याश्रमीं म्हणे श्रुति॥ किंचक्षुर्न गच्छ
ति॥ म्हणिजे डोळान पावें त्या वस्तुंत
येरिती॥ श्रुती हा कामारिते॥ १०॥
कोण्ही ऐसे ही म्हणती॥ कीं ज्योतीस
पाहेत स्वये तेचि ज्योति॥ नेत्र तेथें कोटें
असति॥ असे तेजमात्र॥ ११॥ तरिराज
दंडबळे॥ ज्याचिका टोळी असती बुब
ळें॥ त्यास त्या बुबळावेगळें॥ अम्हते कां
हो दिसेना॥ १२॥ मिळोन पाषांडिचा व
ट॥ हेचि अम्ह म्हणुनि आडवार॥ ज्ञान
मार्गे दाउनि अचार॥ गुस्त्व संतपण
मिरविती॥ १३॥ अम्ह नळे ज्योती॥ अ
म्ह नदिसे डोळिया प्रति॥ अँसो हे पा
षांड मत्तरिती॥ पुढे विश्वरूपा ध्यायां
त ही खंडेल॥ १४॥ (१५॥ १६॥ १७॥
१८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥

... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

[OrderDescription]
,CREATED=11.10.19 14:07
,TRANSFERRED=2019/10/11 at 14:09:14
,PAGES=6
,TYPE=STD
,NAME=S0002029
,Book Name=490
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,